11 / 01 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बाप समान समर्थ स्थिति की अनुभूति

➢➢ स्वयं स्थिति की चेकिंग

➳ _ ➳ भृकुटी की अकाल तख्त पर बैठी

➳ _ ➳ मैं आत्मा परिवर्तन की इस यात्रा में

➳ _ ➳ स्वयं की समर्थ स्थिति की चेकिंग करती हूं

→ मैं ब्राह्मण आत्मा अपने नए जन्म के

→ नए दिव्य संस्कारों को देख रही हूं

→ परमात्म पिता ने मेरी पालना कर

→ मुझे दिव्य संस्कारों का पाठ पढ़ाया है

◆ इस अलौकिक जन्म में

◆ मेरे सारे पुराने संस्कार समाप्त हो

◆ नए दिव्य संस्कार इमर्ज हो चुके हैं

● मैं दैवी संस्कारों वाली दिव्य आत्मा हूं

➳ _ ➳ श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान दे बाबा ने

➳ _ ➳ मेरा भाग्य ऊंच बना दिया है

→ अब मेरा हर कर्म बाप समान है

→ जो बाबा का कार्य वही मेरा कार्य है

◆ लौकिक कर्तव्य निभाते भी मैं आत्मा

◆ सदा अपने अलौकिक कर्तव्य का पालन करती हूं

● हर करम करते करावणहार करा रहा है

● इसी स्मृति में रहती हूं

➳ _ ➳ सदा अपनी वाणी पर अटेंशन रखने वाली

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा सुखदाई बोल बोलती हूं

→ बेहद का कल्याण करने वाले

→ कल्याणकारी वाक्य ही मेरे मुख से निकलते हैं

◆ इस वाणी द्वारा सर्व को बाबा का परिचय दें

◆ अनेक आत्माओं की दुआओं को प्राप्त करती हूं

➳ _ ➳ मेरे संकल्पों में एक शिवबाबा समाया हुआ है

➳ _ ➳ वह दिलाराम है जिसको मुझ आत्मा ने

➳ _ ➳ दिल में बसाया है

→ तो मेरे दिल मे, दिमाग में

→ एक बाप की याद है

◆ बाबा की याद से मेरा हर संकल्प

◆ श्रेष्ठ ,सिद्धि स्वरूप बनता जा रहा ह

● मेरे एक- एक संकल्प द्वारा

● विश्व की अनेक आत्माओं का कल्याण हो रहा है

● अपनी संकल्प शक्ति को यूज कर

● इस विश्व में शांति और शक्ति की

● किरने फैलाने के निमित्त हूं

➳ _ ➳ मेरा मन ,बुद्धि, वाणी और कर्म

➳ _ ➳ सब बाप के हो गए हैं

➳ _ ➳ मेरा हर संकल्प मे, बोल में

➳ _ ➳ बस बाबा ही बाबा है

→ यह देह भी बाबा की अमानत है

- ◆ मैं आत्मा सब कुछ बाबा को सौप
- ◆ संपूर्ण हल्के पन का अनुभव कर रही हूं
  - ● सब कुछ तेरा-तेरा करने वाली
  - ● मैं संपूर्ण समर्थ आत्मा हूं
  - ● मैं आत्मा बाप समान हूं